B.A
Part III
paper-6

(1) अलंकारों का एक तर्कसम्मत वर्गीकरण प्रस्तुत करें।

उत्तर :- अलंकारों के वर्गीकरण के इतिहास में रुद्रट का महत्वपूर्ण स्थान है। वे अलंकारों को वास्तव, औपम्य, अतिशय और श्लेष इन चार वर्गों में विभक्त करते हैं किन्तु उनका यह वर्गीकरण तर्कमूलक न था, इसमें अनेक असंगतियाँ भी थीं अतः मान्य न हो सका। रुद्रट की अपेक्षा रुय्यक के वर्गीकरण का अधिक सम्मान हुआ है, जिसका हम आगे निर्देश करेंगे।

अलंकारों के भेद :- शब्द और अर्थ को चमत्कृत करने वाले अलंकार तीन प्रकार के होते हैं।

(1) **शब्दालंकार** :- यह अलंकार अपना सौन्दर्य शब्द विशेष के चमत्कार के द्वारा दिखलाते हैं शब्द विशेष के परिवर्तन से शब्दालंकार प्रभावित होते हैं। जैसे अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि।

(2) अर्थालंकार :- जो अलंकार काव्य में अर्थ के द्वारा [illegible] प्रकार के अलंकारों में शब्द विशेष का पर्याय भी कभी-कभी ग्राह्य होता है जो कि अर्थ में किसी प्रकार का आघात उत्पन्न न करे जैसे :- उपमा आदि।

(3) उभयालंकार :- जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमत्कृत करते हैं, वे उभयालंकार कहलाते हैं। इन अलंकारों का शब्दार्थालंकार अथवा मिश्रितालंकार भी कहते हैं।

वर्गीकरण :- आचार्यों ने प्रत्येक अलंकार में उक्ति वैचित्र्य की विभिन्नता होने पर भी कुछ अलंकारों के मूलभूत तत्वों में साम्य देखा है और उसी के आधार पर अलंकारों को वर्गों में विभाजित किया है। इस विभाजन की रूपरेखा यह है -

काव्यशास्त्री उद्भट ने विषयानुसार अलंकारों के छः वर्ग माने हैं।
प्रथम वर्ग :- आठ अलंकार :- पुनरुक्तवदाभास, छेक, वृत्ति, लाट, अनुप्रास, दीपक, उपमा, प्रतिवस्तूपमा (चार शब्दालंकार व चार अर्थालंकार)

द्वितीय वर्ग :- नौ अलंकार - आक्षेप, अर्थान्तरन्यास, व्यतिरेक, विभावना, समासोक्ति, अतिशयोक्ति, यथासंख्य, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति।
तृतीय वर्ग :- तीन अलंकार :- यथासंख्य, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति।
चतुर्थ वर्ग :- सात अलंकार - प्रेयस्वत, रसवत, उर्जस्वी, पर्यायोक्ति, समाहित, उदात्त, संश्लिष्ट।
पंचम वर्ग :- ग्यारह अलंकार - अपह्नुति, विशेषोक्ति, विरोध, तुल्ययोगिता, अप्रस्तुत, प्रशंसा, व्याजस्तुति, निदर्शना, संकर, उपमेयोपमा, सहोक्ति, परिवृत्ति।
षष्ठ वर्ग :- छः अलंकार - संदेह, अनन्वय, संसृष्टि, भाविक, काव्यलिंग।

आचार्य मल्लिनाथ ने अपने पूर्ववर्ती आचार्य रुय्यक और विद्याधर के वर्गीकरण का अध्ययन पर एक तर्कसंगत एवं समन्वित वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

① सादृश्यमूलक अलंकार :-
(क) भेदाभेदप्रधान - उपमा, उपमेयोपमा, अनन्वय और स्मरण।
(ख) अभेद प्रधान -
~~(ग) ...~~
(घ) अध्यवसायमूलक - उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति।

② औपम्यमूलक अलंकार
(क) पदार्थगत तुल्ययोगिता तथा दीपक
(ख) वाक्यार्थगत - प्रतिवस्तूपमा, दृष्टांत और निदर्शना।
(ग) भेदप्रधान - व्यतिरेक, सहोक्ति तथा विनोक्ति।
(घ) विशेषण विच्छित्ति - परिकर, समासोक्ति।
(ङ) विशेष्यविच्छित्ति - परिकरांकुर।
(च) विशेषण विशेष्य विच्छित्ति - श्लेष
(छ) अप्रस्तुत प्रशंसा, अर्थान्तरन्यास, पर्यायोक्ति, व्याजस्तुति, आक्षेप

③ विरोधमूलक अलंकार -
विरोध, विभावना, विशेषोक्ति, चित्र, असंगति और विषम।

④ शृंखलामूलक अलंकार -
कारणमाला, एकावली, काव्यलिंग तथा सार।

⑤ न्यायमूलक अलंकार -
(क) तर्कन्यायमूलक - काव्यलिंग, अनुमान।
(ख) वाक्यन्यायमूलक - यथासंख्य, पर्याय, विकल्प, अर्थापत्ति, समुच्चय
(ग) लोकन्यायमूलक - प्रत्यनीक, प्रतीप, समाधि, सम, उदात्त।

⑥ गूढार्थ प्रतीतिमूलक अलंकार - सूक्ष्म, व्याजोक्ति, वक्रोक्ति, गूढोक्ति, युक्ति, भाविक तथा विवृतोक्ति